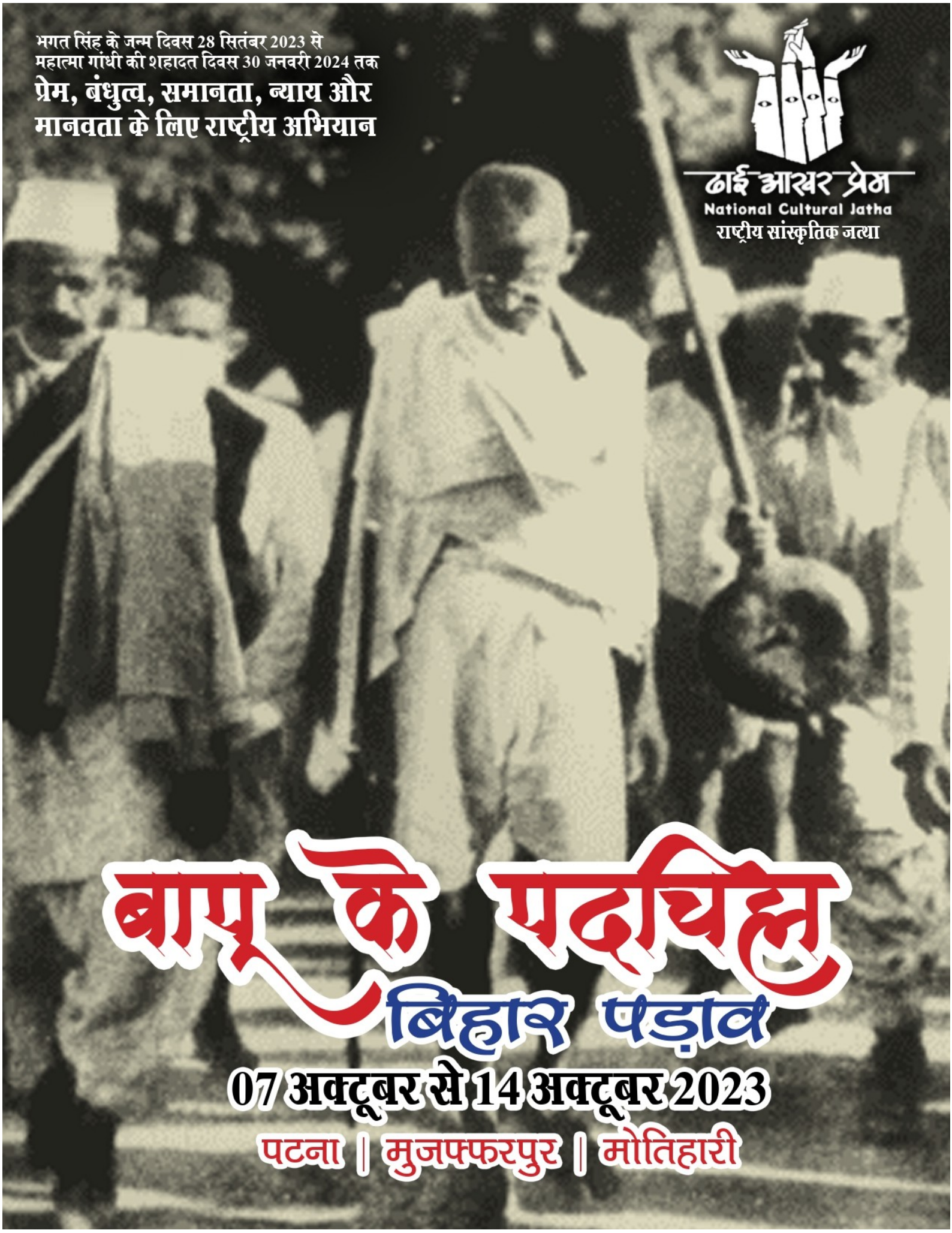

भगत सिंह के जन्म दिवस 28 सितंबर 2023 से
महात्मा गांधी की शहादत दिवस 30 जनवरी 2024 तक

प्रेम, बंधुत्व, समानता, न्याय और मानवता के लिए राष्ट्रीय अभियान

ढाई आखर प्रेम
National Cultural Jatha
राष्ट्रीय सांस्कृतिक जत्था

बापू के पदचिह्न

बिहार पड़ाव

07 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2023

पटना | मुजफ्फरपुर | मोतिहारी

बापू के पदचिह्नों पर प्रेम के ढाई आखर

दोस्तो,

हम, 'ढाई आखर प्रेम' की बात करने वाले लोग हैं. हम आम नागरिक, कलाकार, साहित्यकार, पत्रकार, बुद्धिजीवी हैं. हम यहाँ आपस में नफरत, घृणा, हिंसा, दुश्मनी बाँटने नहीं आए हैं. हम आए हैं, प्रेम की बात करने. सब मिलकर बात करेंगे.

हम समाज के तौर पर जैसे–जैसे आगे बढ़ रहे हैं, वैसे–वैसे हममें दूरियाँ भी बढ़ती जा रही हैं. दूरियाँ बढ़ाई भी जा रही हैं. हम जो एक ताना–बाना में बुने हुए थे, उसे ख़त्म करने की कोशिश हो रही है. नफरत बढ़ाने वाले लोग बढ़ रहे हैं. हमारे टेलीविजन चौनलों और मोबाइल पर दूरी पैदा करने वाले झूठ, नफरती कार्यक्रम, वीडियो और संदेश दिन–रात आ रहे हैं. वे हमें साथ रहना नहीं सिखाते. वे लड़ाना सिखाते हैं. हम यहाँ लड़ने या लड़ाने की बात करने नहीं आए हैं.

हम बापू के पदचिह्नों पर चलने की कोशिश कर रहे हैं. बापू के पदचिह्न यानी बापू के बताए रास्तों को खोजने और उन पर चलने की कोशिश कर रहे हैं. बापू के पदचिह्न पर चलने का मतलब, सत्य, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव की राह पर चलना.

बापू अपने को हिन्दू मानते और खुलकर कहते थे. वे बार–बार कहते थे, 'मैं अपने आपको केवल हिन्दू ही नहीं, बल्कि ईसाई, मुसलमान, यहूदी, सिख, पारसी, जैन या किसी भी अन्य सम्प्रदाय का अनुयायी बताता हूँ. इसका मतलब यह है कि मैंने अन्य सभी धर्मों और सम्प्रदायों की अच्छाइयों को ग्रहण कर लिया है. इस प्रकार मैं हर प्रकार के झगड़े से बचता हूँ और धर्म की कल्पना का विस्तार करता हूँ.' यह बात उन्होंने 10 जनवरी 1947 को कही थी.

यानी एक धर्म मानने का मतलब यह नहीं होता कि हम दूसरे धर्मों के ख़िलाफ हो जाएँ. हमें साथ– साथ रहना है तो साथ–साथ प्रेम से जीना ही होगा.

देखिए बापू 1946 और 1947 में हमसे क्या कहते हैं– 'हिन्दू और मुसलमान सगे भाइयों के समान हैं'। हिन्दुओं और मुसलमानों को याद रखना चाहिए कि एक ही अन्न से उनका पालन–पोषण होता है, वे एक ही आकाश तले बसते हैं, एक ही पानी पीकर अपनी प्यास बुझाते हैं और जब देश पर विपत्ति आती है तो दोनों समान रूप से विपदाग्रस्त होते हैं, चाहे उनका धर्म जो भी हो. यह नितांत आवश्यक है कि दोनों समुदाय आपसी मतभेदों को मिटा दें और शांतिपूर्वक रहें. जिन्होंने धर्म की सच्ची भावना को आत्मसात कर लिया है, वे किसी भी मनुष्य से उनके धर्म के कारण घृणा नहीं कर सकते.'

हम बापू के ऐसे ही संदेश लेकर आए हैं. बापू ने इसी कोशिश में अपनी जान दे दी. उन लोगों ने उनकी जान ले ली जो हमें एकसाथ मिलकर रहते हुए देखना नहीं चाहते थे. बापू के पदचिह्न पर चलने का मतलब है, दूसरों के लिए जान देना. किसी की जान लेना नहीं.

हम अहिंसा में यकीन रखने वाले लोग हैं. वैसा ही, जैसा बापू ने कहा था, जिस व्यक्ति में अभिमान और अहंकार है, उसमें अहिंसा नहीं हो सकती है. नम्रता के बिना अहिंसा नामुमकिन है.'

तो आइए हम सब अपनी जिंदगी में प्रेम के ढाई आखर को याद रखें. अहिंसा, नम्रता और सत्य को याद रखें. क्योंकि बापू मानना था, सत्य ही परमेश्वर है'

निवेदक

भारतीय जन विकलांग संघ (मोतिहारी), बिहार महिला समाज, दलित अधिकार मंच (पटना), इस्कफ (बिहार), आइडिया (मोतिहारी), जन संस्कृति मंच (बिहार), जनवादी लेखक संघ (बिहार), कृषक विकास समिति (मोतिहारी), लोक परिषद्, महात्मा गांधी लोमराज सिंह पुस्तकालय पट्टी जसौली, प्रगतिशील लेखक संघ (बिहार), प्ररेणा (जनवादी सांस्कृतिक मोर्चा), सीताराम आश्रम, बिहटा (पटना) और भारतीय जननाट्य संघ (इप्टा), बिहार।

आयोजन समिति, मोतिहारी: श्री अमर भाई (संयोजक), श्री विनय कुमार (सह संयोजक), श्री मंकेश्वर पाण्डेय (सह संयोजक), श्री अजहर हुसैन अंसारी, श्री दिग्विजय कुमार, श्री हामिद रज़ा, श्री उमा शंकर प्रसाद।
संपर्कः मो० 99343 58852 ईमेलः biharipta47@gmail.com